आचार्य महाप्रज्ञ ने किया रहस्योद्घाटन

दिव्य आत्माओं से कर सकते हैं सम्पर्क

श्रीडूँगरगढ़ 29 दिसम्बर (शुभकरण पारीक): आचार्य महाप्रज्ञ ने तेरापंथ भवन स्थित प्रज्ञा समवसरण में कल्याण मंदिर स्त्रोत पर प्रवचन के दौरान वि-ाल जनभेदनी के सम्मुख एक रहस्योद्घाटन करते हुए कहा कि दिव्य आत्माओं से सम्पर्क कर सकते हैं। उन्होनें अपनी कृति श्रमण महावीर में उल्लेखित भगवान महावीर एवं पूर्वज आचार्यों की आत्माओं से सीधे सम्पर्क का पटाक्षेप करते हुए कहा कि ध्यान के वि-िश्ट प्रयोगों से महान आत्माओं से सम्पर्क साधा जा सकता है। आचार्य महाप्रज्ञ ने इस सन्दर्भ में अपने एक भक्त को उसके पुत्र की मृत्यु के बाद सम्पर्क कराने के लिए कराये गये प्रयोगों का उल्लेख भी किया।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि आचार्य सिद्धसेन ने भी उन्ही ध्यान के प्रयोगों से भगवान पा-र्व की निराकार आत्मा से सम्पर्क कर अपनी जिज्ञासाओं का समाधान पाया है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने क्रोध के बिना कर्म रुपी चौरों का ना-ा कैसे किया जा सकता है ? इस जिज्ञासा के सन्दर्भ में आचार्य सिद्धसेन के द्वारा प्रस्तुत समाधान को विवेचित करते हुए कहा कि जिस तरह से हिमानी पूरे जंगल को नश्ट कर देती है वैसे ही भगवान पा-र्व ने क्रोध नश्ट होने के बाद अपनी :ाीतलता से कर्म चोरों को समाप्त कर दिया। उन्होनें कहा कि व्यक्ति का चेहरा और आंखे उसके आचरण का दर्पण होता है। आंखे उसके सुख, दु:ख, चिंता, आलस आदि को बिन बोले बयां कर देती है। उन्होनें कहा कि देवता और सिद्ध आत्मायें बोल नहीं सकती। बोलने के लिए औदारिक :ारीर की :ाक्ति आव-यक होती है। जो उनमें नहीं पायी जाती है इसलिए देवता दूसरों के मुंह से अपनी बात मनुश्यों तक पहुंचाते है, और आपस में उन्हें बोलने की जरूरत नहीं होती है। वे अपनी दिव्य :ाक्ति से विचारों का आदान-प्रदान कर लेते हैं।

साधना को सिद्धि तक ले जाने का प्रयास करें

गीता और उतराध्ययन का तुलनात्मक विवेचन करते हुये युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि गीता पुनर्जन्म में वि-वास करती है। जैन-द-र्न भी पुर्नजन्म में वि-वास करता है। साधना का लक्ष्य सिद्धि प्राप्त करना होता है किन्तु सब साधक एक ही जन्म में उस लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाते है। गीता का यह भी एक सिद्धांत रहा है कि जिनके मन में साधना की उदात भावना है उन साधकों का पुनर्जन्म योग-साधक के रुप में ही होता है। योग साधना का जो बीज पैदा हो गया वह नश्ट नहीं होता।

युवाचार्यवर ने कहा कि जैन द-र्न भी सम्यक् द-र्न की प्राप्ति को योग साधना का प्रांरभिक चरण माना है। एक बार सम्यकत्व का स्प-र्ा कर लिया जाये तो एक नि-चित अवधि के बाद वह आत्मा मोक्ष अव-य प्राप्त करती है।

उन्होनें कहा कि जो साधु आत्मरमण में लीन हो जाते है उनका पर्याय देवलोक के समान है।

प्रारंभिक प्रवचन में मुनिश्री दिने-ा कुमार ने जयाचार्य कृत चौबीसी के गीत का संगान किया तथा कहा साधक स्वयं को इन्द्रिय-भोग से मुक्त रखें।

त्रिपाठी को अणुव्रत लेखक पुरस्कार

अणुव्रत महासमिति द्वारा अणुव्रत लेखक पुरस्कार दे-ा के एक निश्ठा-ाील साहित्यकार को प्रति वर्श दिया जाता है। धर्मचंद चोपड़ा, डॉ. निजामुधीन, राजेन्द्र अवस्थी, राजेन्द्र-ांकर यह आदि अनेक प्रतिश्ठित लेखकों को यह पुरस्कार दिया गया है। इस वर्श यह पुरस्कार 31

दिसम्बर को आचार्य श्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में जैन वि-व भारती वि-विद्यालय के प्राध्यापक डॉ. आनन्द प्रका-ा त्रिपाठी को प्रज्ञासमवसरण में प्रदान किया जायेगा। :ाासन भक्त स्व. हुकमचंद सेठिया की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र ताराचंद दीपचंद, ठाकरमल सेठिया, श्री डूँगरगढ़ द्वारा प्रायोजित इस पुरस्कार की रा-ि 51 हजार रुपये हैं। इस अवसर पर अणुव्रत महासमिति के अनेक अधिकारी कार्यकर्ता श्री डूँगरगढ़ पहुंच गए है। राजस्थान के प्रसिद्ध कवि इकराम भी उपस्थित रहेंगें। वे अपनी एक काव्यकृति का संगान वाचन भी इस अवसर करेंगे। काव्यकृति का नाम है - वह महाप्रज्ञ कहलाता है।